विविध प्रकार से शिवपूजा का माहात्म्य

भगवान् शिव की पूजा विविध उपचारों से की जाती है। उपचारों की विविधता उपासक की कामना तथा साधनों की उपलब्धि पर निर्भर करती है। अलग-अलग प्रकार के द्रव्यों से शिवजी की पूजा के फल भी अलग-अलग होते हैं। यहाँ पर हम संक्षेप में कुछ प्रकार के द्रव्यों से की जानेवाली पूजा के फलों की चर्चा करेंगे।

भगवान् शिव को ब्राह्म-स्नान करानेवाला सभी पापों से छूटकर रुद्रलोक को प्राप्त करता है। कपिला गाय के पञ्चगव्य में कुशोदक मिलाकर(अभिषेक के) मन्त्रों द्वारा स्नान कराना ब्राह्म-स्नान कहलाता है।

कपिलापञ्चगव्येन कुशवारियुतेन च।
स्नापयेत् मन्त्रपूतेन ब्राह्मं स्नानं हि तत्स्मृतम्।।
एकाहमपि यो लिङ्गे ब्राह्मं स्नानं समाचरेत्।
विधूय सर्वपापानि रुद्रलोके महीयते।। (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 205)

जो व्यक्ति कोल्हू से निकले तिल के तेल से शिवलिंग का अभिषेक करता है, वह शिवपद को प्राप्त करता है। जो कपूर और अगुरु मिश्रित जल से लिंग को स्नान कराता है, वह सभी पापों से मुक्त होकर शिव-सायुज्य को प्राप्त करता है। जो वस्त्र से छाने हुए जल से लिंग को स्नान कराता है वह अपनी कामनाओं को पूरा कर वरुणलोक को प्राप्त करता है।

यःपुमांस्तिलतैलेन करयन्त्रोद्भवेन च।
शिवाभिषेकं कुरुते स शैवं पदमाप्नुयात्।।
कर्पूरागुरुतोयेन यो लिङ्गं स्नापयेत्सकृत्।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवसायुज्यमाप्नुयात्।।
वस्त्रपूतेन तोयेन यो लिङ्गं स्नापयेत्सकृत्।
सर्वकामसुतृप्तात्मा वारुणं लोकमाप्नुयात्।। (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 206)

अष्टांगअर्घ्य को निवेदन करनेवाला दस हजार वर्षोंतक रुद्रलोक में निवास करता है।

योऽष्टाङ्गमर्घमापूर्य लिङ्गमूर्धनि निःक्षिपेत्।।
दशवर्षसहस्राणि रुद्रलोके महीयते। (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 208)

सुन्दर रंगीन एवं मुलायम वस्त्र समर्पित करनेवाला हजारों वर्षोंतक शिवलोक में निवास करता है। इसी प्रकार श्वेत या पीले रंग का पट्टसूत्रादि से निर्मित तीन धागोंवाला यज्ञोपवीत अर्पित करनेवाला वेदान्त का ज्ञाता होता है।(वीरमि. पू. प्र. पृ. 208-209)

त्रिवृत् शुक्लं सुपीतं वा पट्टसूत्रादिनिर्मितम्।
दत्त्वोपवीतं रुद्राय भवेद्वेदान्तपारगः।। (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 209)

चन्दन, अगुरु, कपूर तथा कुंकुमादि से लिंग का लेपन करनेवाला करोड़ों कल्पोंतक स्वर्ग में निवास करता है।

चन्दनागुरुकर्पूरैः श्लक्ष्णपिष्टैः सकुङ्कुमैः।
शिवलिङ्गं समालिप्य कल्पकोटिं वसेद्दिवि।। (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 209)

पर्वत या जंगल में स्वतः उत्पन्न ताजे छिद्र तथा जन्तुओं से रहित फूल या पत्तों से शिवजी की पूजा का वही फल होता है जो तपस्वी वेदज्ञ ब्राह्मण को सुवर्ण दान देने से होता है। अर्थात् सुवर्ण के दान के फल के बराबर पत्र-पुष्प से पूजा करने पर होता है।(वीरमि. पू. प्र. पृ. 210)

अपामार्ग से चतुर्दशी के दिन शिव की पूजा करनेवाला शिवसारूप्य को प्राप्त करता है। इसी प्रकार पंचाक्षर-मंत्र से बिल्वपत्रों द्वारा शिव की पूजा करनेवाला शिवजी के पद को प्राप्त कर लेता है।

अपामार्गदलैर्यस्तु पूजयेद्गिरिजापतिम्।
स याति शिवसारूप्यं चतुर्दश्यां न संशयः।।
पञ्चाक्षरेण मन्त्रेण बिल्वपत्रैः शिवार्चनम्।
करोति श्रद्धया युक्तः स गच्छेदैश्वरं पदम्।।(वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 213)

भगवान् शिव को बिल्वपत्र इतना प्रिय है कि सूखे हुए एवं बासी बिल्वपत्रों से पूजा करनेवाला भी सभी पातकों से मुक्त हो जाता है।

शुष्कैः पर्युषितैर्वापि बिल्वपत्रैस्तु यो नरः।
पूजयंस्तु महादेवं मुच्यते सर्वपातकैः।। (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 214)

गुग्गुल में घी मिलाकर जो भगवान् शिव को धूप अर्पित करता है वह रुद्रलोक को प्राप्त कर गणपति के पद को प्राप्त करता है।

गुग्गुलं घृतसंयुक्तं शिवे यश्च निवेदयेत्।
रुद्रलोकमवाप्नोति गाणपत्यं च विन्दति।। (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 216)

घी या तिल के तेल का दीपक शिव के निमित्त प्रदान करनेवाला व्यक्ति सभी पापों से मुक्त हो जाता है तथा उसकी सभी कामनाएँ पूरी हो जाती हैं(वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 75)। कार्तिक मास में दीपमालिका करनेवाला रुद्रलोक को प्राप्त होता है(वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 218)।

भगवान् शिव को घी एवं गुड़ आदि से बने पदार्थों तथा खीर आदि का नैवेद्य अर्पित करनेवाला सहस्रों वर्षतक रुद्रलोक में निवास करता है, उसकी दुर्गति नहीं होती तथा वह स्वर्गलोक को भोगता है।

पायसं घृतसंयुक्तं महेशाय प्रयच्छति।
न दुर्गतिमवाप्नोति स्वर्गं लोकं च गच्छति।। (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 220)

पाँच सुगन्धियों(जैसे इलायची, कपूर तथा कंकोल आदि) से युक्त ताम्बूल को भगवान्

शिव को अर्पित करनेवाला करोड़ों वर्षोंतक रुद्रलोक में निवास करता है(वीरमि. पूजाप्र. पृ. 220)। सफेद या गेरुवे या लाल कपड़े की ध्वजा को अर्पित करनेवाला भी शिवलोक को प्राप्त करता है।

श्वेतं महाध्वजं दत्त्वा कृत्वा वै गैरिकेण तु।
स याति परमं स्थानं यत्र देवः पिनाकधृक्।। (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 221)

शिवमंदिर में लोहे की शृंखलायुक्त विशाल घण्टे को जो लटकाता है वह घण्टाकर्ण गण के सदृश बलवान् हो शिवलोक को प्राप्त करता है। इसी प्रकार जो शिवजी को भेरी, मृदंग, दुन्दुभि आदि वाद्यों को अर्पित करता है, वह भी दिव्य शिवलोक को प्राप्त करता है(वीरमि. पूजाप्र. पृ. 222)।

माला एवं उपहारों(गन्धादि) से शिवजी का जप एवं पूजन किया जाय तो उससे ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है।

महामाल्योपहारैश्च यो मां जप्यैश्च पूजयेत्।
ददामि ब्रह्मलोकस्य वासं वास्तुसुपूजितम्।। (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 225)

भगवान् शिव की तीन बार प्रदक्षिणा तथा पाँचबार(अथवा पंचांग) प्रणाम करके पुनः प्रदक्षिणा करने पर व्यक्ति को शिवलोक की प्राप्ति होती है।

प्रदक्षिणत्रयं कृत्वा नमस्कारैश्च पञ्चभिः।
पुनः प्रदक्षिणं कृत्वा शिवलोके महीयते।। (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 236)

दण्डवत् प्रणाम द्वारा शिवजी की पूजा करने पर सैकड़ों यज्ञों से भी अधिक फल प्राप्त होता है। दण्डवत् नमस्कार से सभी कामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं। सैकड़ों एवं हजारों तीर्थ महादेवजी के प्रणाम की 16हवीं कला के तुल्य भी नहीं हैं। अर्थात् भगवान् शिव को प्रणाम करने से जो फल प्राप्त होता है वह मात्र तीर्थयात्रा से प्राप्त नहीं हो सकता।

तीर्थकोटिसहस्राणि तीर्थकोटिशतानि च।
महादेवप्रणामस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्।। (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 236)

रोग को दूर करने के लिये लघुरुद्र, महारुद्र और अतिरुद्र का जप या अभिषेक किया जाता है। भगवान् शिव ने पार्वती से रुद्राभिषेक का माहात्म्य बतलाते हुए कहा है कि–

सर्वकर्माणि सन्त्यज्य सुशान्तमनसो यदा।
रुद्राभिषेकं कुर्वन्ति दुःखनाशो भवेद् ध्रुवम्।।

(धर्मसिन्धुः पृ. 674, पादटिप्पणी)

अर्थात्– सभी कर्मों को छोड़कर शान्तमन से रुद्राभिषेक करने से अवश्य ही दुःखों का नाश हो जाता है।

जल द्वारा रुद्राभिषेक से वृष्टि, कुशोदक द्वारा अभिषेक से व्याधि की शान्ति, दही से पशु की प्राप्ति, गन्ने के रस से श्रेय की प्राप्ति, मधु एवं घी से अभिषेक करने पर धन की प्राप्ति,

तीर्थजल से मोक्ष की प्राप्ति तथा खीर से पुत्र की प्राप्ति होती है।(धर्मसिंधुः पृ. 674)

पूर्वजन्मकृत पाप ही रोग का रूप धारण कर प्राणी को पीड़ित करता है(**'पूर्वजन्मकृतं पापं व्याधिरूपेण बाधते'**)। रुद्रजप या अभिषेक से पाप का नाश निश्चितरूप से होता है(**'रुद्राध्यायी मुच्यते सर्वपापैः'**)। पाप के नाश हो जाने पर रोग का स्वतः ही नाश हो जाता है। अतः शतरुद्रि का प्रयोग रोगादि के नाश के लिये उत्तम माना गया है।(धर्मसिन्धुः पृ. 674, पादटिप्णी देखें)

चतुर्दशी, अष्टमी, पूर्णमासी तथा अमावस्या के दिन लिंग को दूध से स्नान कराने वाले को पृथ्वीदान का फल प्राप्त होता है।

चतुर्दश्यां तथाष्टम्यां पौर्णमास्यां विधुक्षये।
पयसास्नापयेल्लिङ्गं धरादानफलं व्रजेत्।। (मन्त्रमहोदधिः 19/109)

❀❀❀❀❀❀

ब्राह्मण कौन?

सर्परूपधारी नहुष ने युधिष्ठिर से पूछा कि ब्राह्मण कौन है? तो युधिष्ठिर उत्तर देते हैं-

सत्यं दानं क्षमाशीलमानृशंस्यं तपो घृणा।
दृश्यन्ते यत्र नागेन्द्र स ब्राह्मण इति स्मृतः।। (महाभारत, वनपर्व 180/21)

नागराज! जिसमें सत्य, दान, क्षमा, सुशीलता, क्रूरता का अभाव, तपस्या और दया-ये सद्गुण दिखायी देते हों वही ब्राह्मण कहा गया है।

पुनः कहते हैं यदि शूद्र में सत्य आदि उपर्युक्त लक्षण हैं और ब्राह्मण में नहीं हैं तो वह शूद्र शूद्र नहीं है और वह ब्राह्मण ब्राह्मण नहीं है। सर्प! जिसमें सत्य आदि लक्षण मौजूद हों, वह ब्राह्मण माना गया है। और जिसमें इन लक्षणों का अभाव हो उसे शूद्र कहना चाहिये।

शूद्रे तु यद् भवेल्लक्ष्म द्विजे तच्च न विद्यते।
न वै शूद्रो भवेच्छूद्रो ब्राह्मणो न च ब्राह्मणः।।
यत्रैतल्लक्ष्यते सर्प वृतं स ब्राह्मणः स्मृतः।
यत्रैतन्न भवेत् सर्प तं शूद्रमिति निर्दिशेत्।।

(महाभारत, वनपर्व 180/25-26)

जिस मनीषी पुरुष के उपस्थ, उदर, हाथ-पैर और वाणी-ये सभी द्वार पूर्णतः रक्षित(अर्थात् वश में) हैं वही वास्तव में ब्राह्मण है।

द्वाराणि यस्य सर्वाणि सुगुप्तानि मनीषिणः।
उपस्थमुदरं बाहू वाक् चतुर्थी स वै द्विजः।।

(महाभारत, शान्तिपर्व, मोक्षधर्मपर्व 269/28)